7. महाजनपद के राजा

तुम राजा के बारे में कुछ बताओ - राजा कौन होता है, कैसा होता है? वह लोगों के लिए क्या करता है और लोग उसके लिए क्या करते हैं? वह लोगों को क्या देता है और लोग उसे क्या देते हैं?
इस पाठ के चित्रों में राजा और लोगों के बारे में क्या-क्या दिख रहा है? क्या तुमने जो बातें बताई वे चित्रों में दिख रही हैं?

तुम ने पिछले पाठ में देखा कि कई छोटे-छोटे जनपद बन चुके थे। तब से तीन-चार सौ साल बीत गए। उसके बाद का समय कैसा था – यह हम इस पाठ में देखेंगे। यह **महाजनपदों** का समय कहा जाता है।

जनपद का मतलब तुम जानते ही हो - सही मतलब को चुनो - 1. जन की गाएं जहां चरतीं हैं 2. जन के लोग जिस गांव में रहते हैं 3. जन के लोग जिस इलाके में खेती करते हैं और बस गए हैं

महाजनपद का क्या मतलब हो सकता है?

उस समय सोलह बड़े जनपद यानी महाजनपद थे। ये मानचित्र में दिखाए गए हैं। इन जनपदों में कौन से नए जनपद हैं? और कौन से जनपद पुराने हैं? तालिका में लिखो-

पुराने जनपद	*नए जनपद*

पुराने जनपदों की संख्या ज़्यादा है या नए जनपदों की ?

नए जनपद पुराने जनपदों की किस दिशा में बने थे?

मानचित्र में उस समय के 16 बड़े जनपद ही दिखाए हैं। इनके अलावा कई छोटे-छोटे जनपद भी थे। महाजनपदों में बहुत सी नई-नई बातें हो रहीं थीं। उस समय की कई कहानियों और किताबों से उन बातों के बारे में पता चलता है। इनकी मदद से हम कल्पना भी कर सकते हैं कि महाजनपद के राजा कैसे थे।

कहानी - महाजनपद का एक राजा

कल्पना करो कि एक महाजनपद का पुरुजित नाम का राजा था। उसने कई जनपदों को युद्ध में हराया था और उनका बहुत सा धन जीत लिया था। उसने अपने जनपद के लोगों से भी बलि ले-ले कर धन जमा कर लिया था। इस तरह उसके पास बहुत धन इकट्ठा होने लगा था।

राजा पुरुजित ने अपने पास जमा धन से बहुत से हथियार और घोड़े जमा किए। अब वह एक बड़ा सुन्दर महल बनवाना चाहता था।

राजा पुरुजित के मन में धन का लालच बढ़ता जा रहा था। वह बार-बार आस-पास के जनपदों पर हमला करके उनको अपने अधिकार में करने की कोशिश करता था।

सेना बनाने की योजना

जैसा कि रिवाज़ था राजा पुरुजित को अपने पास इकट्ठे हो रहे धन में से राजन्यों को भी बांटना पड़ता था। उसे बड़े-बड़े यज्ञ करने पड़ते थे। यज्ञ करके जनपद के लोगों को भोजन कराना पड़ता था। ब्राह्मणों को दान-दक्षिणा देनी पड़ती थी। जो राजा यज्ञों में जितना ज़्यादा धन खर्च करे उसका उतना ज़्यादा मान होता था।

पर राजा पुरुजित को इस तरह अपना धन बांटना अखरने लगा। वह बहुत सारे जनपदों से युद्ध करना चाहता था। जब वह किसी जनपद पर हमला करता तो कभी उस पर भी दूसरे जनपद का राजा हमला करता था। इसलिए राजा पुरुजित युद्ध की अच्छी तैयारी करना चाहता था। वो सोचा करता - 'अगर राज्य का धन मेरे पास ही जमा होता रहे तो मैं अच्छे से अच्छे हथियार और घोड़े व हाथी रखूंगा।'

इसके अलावा राजा पुरुजित को एक सेना बनाने की ज़रूरत भी महसूस होने लगी थी। हम जानते हैं कि उस समय तक जनपदों में सेना नहीं होती थी। जनपद के लोग अपने राजा व राजन्यों के साथ लड़ाई पर जाते थे। पर जनपद के लोगों को खेती, कारीगरी के कई काम रहते थे। जब कभी राजा चाहे तब सारे काम छोड़ कर लोग लड़ने नहीं जा सकते थे। पुरुजित इस बात से परेशान रहने लगा।

वह सोचने लगा - 'अगर मेरे पास हज़ारों ऐसे लोग हों जो बस मेरे लिए लड़ने का काम करें, और कुछ न करें - तभी काम चलेगा। मेरे पास धन जमा हो जाए तो मैं कुछ लोगों को रख लूं। मैं उनकी ज़रूरत के हिसाब से उन्हें धन दूं। वे खेती या और कोई काम-धंधा न करें। हमेशा मेरी सेवा में रहें। मैं उन्हें हथियार चलाना और युद्ध करना सिखवाऊं। फिर मैं जब कहूं, जहां कहूं - वे मेरे लिए युद्ध करने चल दें।'

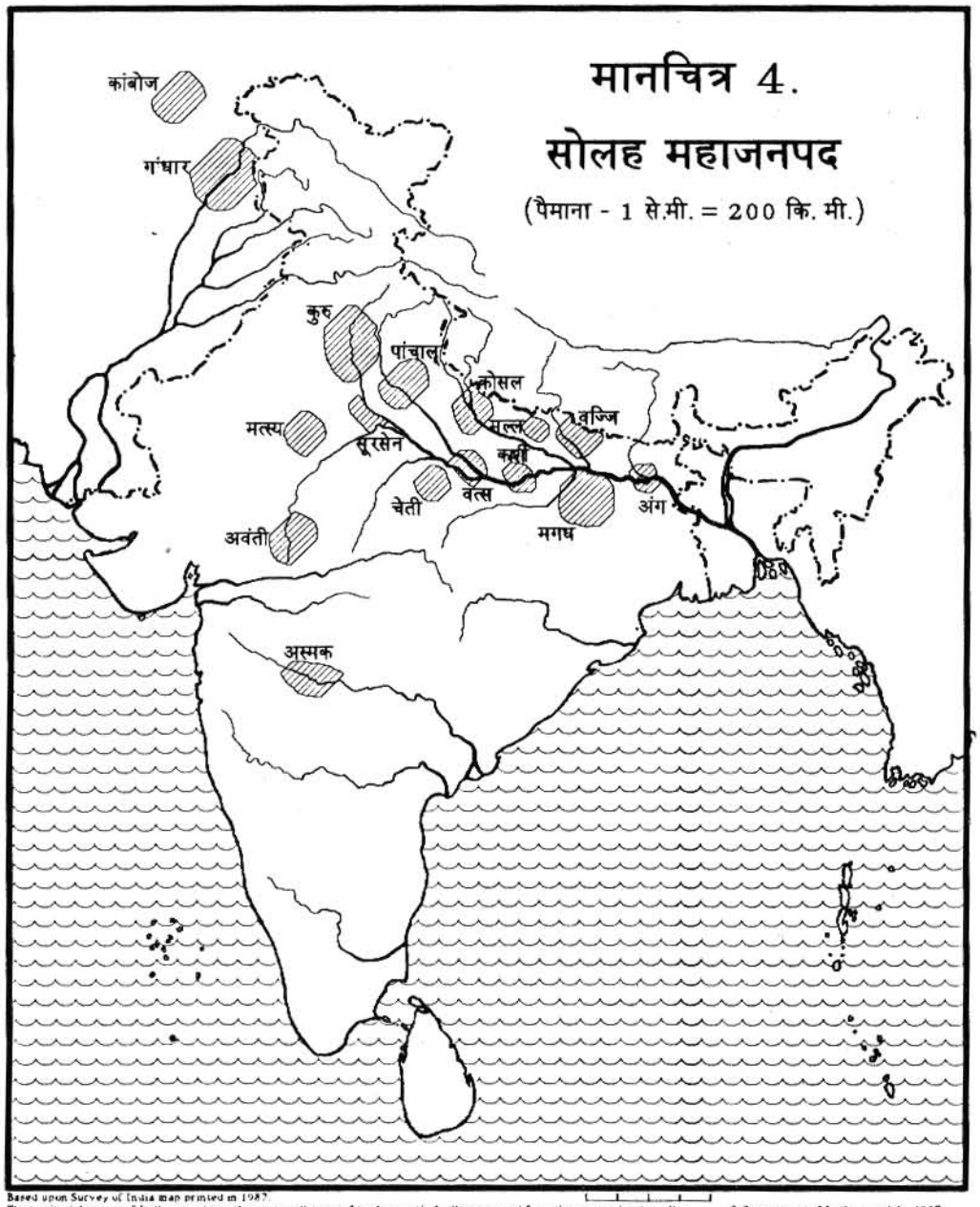

मानचित्र 4.
सोलह महाजनपद
(पैमाना - 1 से.मी. = 200 कि. मी.)

Based upon Survey of India map printed in 1987.
The territorial waters of India extend into the sea to a distance of twelve nautical milesmeasured from the appropriate base line.
© Government of India copyright, 1987.

संकेत

भारत की वर्तमान बाह्य सीमा	—.—.—
सागर	⁀⁀⁀
महाजनपद	(रेखांकित क्षेत्र)

इस तरह पुरुजित एक सेना बनाने का विचार करने लगा।

राजा ने सेना बनाने के काम में देरी नहीं की। कुछ सालों में उसने हज़ारों लोगों को अपनी सेवा में भर्ती कर लिया। अपनी सेना के बल पर पुरुजित ने आसपास के कई जनपदों को युद्ध में हराया और उनको अपने जनपद में मिला लिया। उन जनपदों के लोगों से भी वह बलि लेने लगा। उसका जनपद महाजनपद बन गया।

आसपास के क्या, दूर-दूर के राजा भी पुरुजित की सेना से डरने लगे, क्योंकि अब वह कभी भी उन पर हमला कर सकता था। पुरुजित की देखा-देखी और उसके डर से दूसरे राजाओं ने भी अपनी-अपनी सेनाएं बनाने की कोशिश शुरू कर दी।

राजा पुरुजित को धन इकट्ठा करने की चिन्ता क्यों लगी रहती थी?

छोटे जनपद सेना के बिना युद्ध कैसे करते थे?

महाजनपद का राजा सेना क्यों बनाना चाहता था? इससे उसे क्या फायदा होता?

बलि का कानून

राजा पुरुजित ताकतवर और प्रसिद्ध हो गया था। पर उसकी चिन्ताओं का अन्त नहीं था। भला अब उसे किस बात की चिन्ता थी?

राजा को अब भी धन की चिन्ता थी। उसे हज़ारों सैनिकों को साल भर का वेतन देना पड़ता था। हथियारों, हाथियों, घोड़ों का इन्तज़ाम भी करना पड़ता था।

फसल का एक हिस्सा राजा की बलि के लिए

राजा सोचा करता, 'जो भी हो, अब मेरे पास जमा धन में कभी कमी नहीं आनी चाहिए। वरना ये हज़ारों सैनिक मेरी सेवा में नहीं रहेंगे। क्या उपाय करूं कि नियम से मेरे पास धन जमा होता रहे?'

इस चिन्ता का उसने क्या हल निकाला होगा?

क्या बार-बार युद्ध करने से धन की समस्या हल हो सकती थी?

राजा ने एक कानून बनाया और जनपद के सब गांवों में लोगों को नगाड़े बजवा कर सुनाया।

"सभी खेती करने वाले ध्यान दें। राजा पुरुजित का आदेश है। हर फसल के बाद उसके छः हिस्सों में से एक हिस्सा राजा के लिए बलि में निकाल दें। जो खेती करने वाले बलि नहीं देंगे, उन्हें राजा कठोर दण्ड देगा।"

इस तरह लोगों से बलि लेने का कानून बना। राजा नियम से हर फसल के बाद लोगों से बलि का अनाज इकट्ठा करवाने लगा।

पाठ का यह अंश किसके बारे में है? -- 1. युध्द की ज़रूरत 2. सेना की ज़रूरत 3. सेना के लिए धन जमा करने की ज़रूरत

महाजनपद के राजा ने बलि लेने का क्या नियम बनाया - सही विकल्प चुनो -

लोग अपनी इच्छा से भेंट दें/लोग हर फसल पर एक हिस्सा दें/राजा जब मांगे तब कुछ दें

महाजनपद के दिनों में राजा को हर फसल पर बलि लेने की ज़रूरत क्यों पड़ी?

राजा के अधिकारी

राजा पुरुजित को कुछ ही सालों में और इन्तज़ाम करने ज़रूरी लगे। किस गांव से कितनी बलि मिली, कितनी नहीं मिली - इसका हिसाब-किताब रखना ज़रूरी लगा। जो किसान बलि न दें, उनकी शिकायत सुनना और उन्हें दंड देना पड़ता था। इन सब कामों के लिए उसे मदद की ज़रूरत थी।

सेना की देख-रेख का काम भी बहुत बढ़ गया था।

पुराने दिनों में जन के प्रमुख लोग यानी राजन्य ही सारे काम काज संभाला करते थे। उन्हें राजा से बलि और जीत में मिले धन का हिस्सा मिलता था।

पर राजा पुरुजित ने सोचा, 'मैं सिर्फ अपने जन के राजन्यों और अपने संबंधियों की मदद से इतने सारे काम नहीं करवा सकता। जिन जनपदों को मैंने जीत लिया है उनमें भी कई वीर, योग्य और वफादार लोग मुझे मिलते हैं। तो क्या हुआ अगर वे मेरे संबंधी नहीं हैं या दूसरे जन के हैं? मुझे तो काम से मतलब है। जो भी ठीक से काम करेगा मैं उसे ठीक से वेतन दूंगा। जो मेरी पसन्द का काम नहीं करेगा उसे सेवा से निकाल दूंगा। इस तरह मैं अपनी इच्छा के अनुसार राज्य का शासन चला सकूंगा।'

यह सोच कर राजा पुरुजित ने अपनी सहायता के लिए कई अधिकारी और कर्मचारी रखे। वे उसके आदेशों के अनुसार काम करने लगे। उसने कुछ योग्य लोगों को अपना मंत्री भी बनाया जो उसे सलाह देते थे और उसकी तरफ से कई कामों की देखरेख करते थे। राजा अपने अधिकारियों, कर्मचारियों और मंत्रियों को **नियमित वेतन** देने लगा।

अब महाजनपदों में राजन्यों का महत्व कम होने लगा और राजा अपने जनपद के कई दूसरे लोगों की मदद से राज्य चलाने लगा।

इस अंश की मुख्य बातें क्या हैं? सिर्फ तीन वाक्यों में बताओ ।

राजा के मन का प्रश्न

राज्य के सारे इन्तज़ाम करने में बहुत धन खप रहा था। इस कारण भी पुरुजित दूसरे जनपदों को हरा कर उन्हें अपने राज्य में मिलाने की सोचता रहता था।

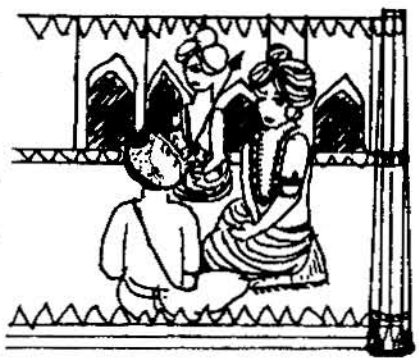

कुछ सालों में राजा पुरुजित को एक और बात सूझने लगी। वह ऐसे सब खर्चे कम करना चाहता था जो उसे बहुत ज़रूरी नहीं लगते थे। जैसे पुराने रिवाज़ के अनुसार उसे बड़े-बड़े यज्ञ करने पड़ते थे। अगर वह ऐसे यज्ञ न करे तो उसके संबंधी और ब्राह्मण बुरा मानते थे। राजा के मन में प्रश्न उठता-इतने बड़े यज्ञ करना क्यों ज़रूरी है? इन यज्ञों से क्या मिलता है?

राजा पुरुजित ने बड़ी-बड़ी समस्याओं का हल निकाला, पर यज्ञ जैसे रीति-रिवाज़ों को बदलने की चिन्ता लिए ही उसका जीवन-काल खत्म हो गया।

बाद में आने वाले समय में रीति रिवाज़ों में भी बदलाव आए, जिनके बारे में हम आगे एक पाठ में पढ़ेंगे।

जो बातें राजा पुरुजित की कहानी से हमने समझीं वे उस समय के बहुत से जनपदों में हुई थीं। उस समय के महाजनपदों के राजाओं ने अपनी सेनाएं बनाईं, अधिकारी व मंत्री रखे और बलि लेने का कानून बनाया।

महाजनपदों के सभी कामों में, सभी बातों में राजा ही शक्तिशाली हो गया। राजन्यों और जन के लोगों का अब पहले जैसा महत्व नहीं रहा। अब पहले जैसी सभाएं होना भी बन्द हो गईं।

गणसंघ

उन दिनों कुछ ऐसे भी जनपद थे जिनमें कोई एक राजा शक्तिशाली नहीं बना। ऐसे जनपदों में एक वंश के सारे पुरुष मिल कर शासन करते थे। वे आपस में सभा करके एक दूसरे से बातचीत करके अपने जनपद का कामकाज चलाते थे। इन जनपदों के सब के सब पुरुष अपने आपको राजा कहते थे। है न मज़े की बात! एक जनपद में सैकड़ों राजा! इस तरह के जनपदों को **गणसंघ** कहा जाता था।

उन दिनों दो बड़े गणसंघ थे - मल्ल और वज्जि। इन्हें नक्शे में पहचानो।

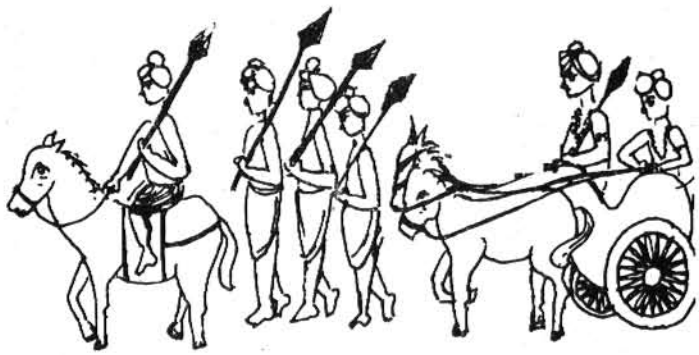

इन दोनों चित्रों में से राजा का कौन सा चित्र है और गणसंघ का कौन सा चित्र है? कारण सहित बताओ।

मगध साम्राज्य

सोलह जनपदों में मगध ज़नपद सबसे ताकतवर निकला। इस जनपद में बिंबिसार नाम के राजा ने एक बड़ी सेना बनाई थी। उसके बेटे अजातशत्रु ने कई जनपदों को हरा कर उन्हें मगध जनपद में मिला लिया था।

मानचित्र 5 देखो। उसमें अजातशत्रु के राज्य की सीमा बताई गई है। मानचित्र 4 से तुलना करो और बताओ कि कौन-कौन से जनपद मगध जनपद में मिला लिए गए थे?

कुछ साल बाद मगध में महापद्मनंद नाम का राजा हुआ। उसने अपने पास इतना सारा धन जमा किया और इतनी बड़ी सेना तैयार की कि वह इन बातों के लिए दूर-दूर तक प्रसिद्ध हो गया।

मानचित्र 5 में महापद्मनंद के राज्य की सीमाएं देखो। देखो कि उसने अजातशत्रु के बाद और कौन-कौन से जनपदों पर अपना अधिकार कर लिया? कौन-कौन से जनपद उसके राज्य के बाहर थे?

महापद्मनंद ने इतने सारे राज्यों को हरा कर, मगध में मिला लिया था कि उसके राज्य को मगध **साम्राज्य** कहा जाता है।

सिकन्दर का हमला

उन दिनों यूरोप महाद्वीप के यूनान देश में मेसिडान नाम का एक राज्य था। वहां का राजा सिकन्दर अपनी बड़ी भारी सेना लेकर दुनिया जीतने के इरादे से चला था। वह बहुत से राजाओं को हराता हुआ सिन्धु नदी के किनारे पहुंचा था। वहां उसने बहुत से छोटे-छोटे राज्यों और गणसंघों को हराया। इनमें से एक का राजा था पुरु - जिसकी कहानी तुमने ज़रूर सुनी होगी। इन राज्यों के लोगों ने सिकंदर का इतना तगड़ा मुकाबला किया कि उसकी सेना थक गई। जब उन्होंने मगध के राजा महापद्मनन्द की **भीमकाय** सेना के बारे में सुना तो उन्होंने आगे जाने और मगध की सेना से लड़ने से इंकार कर दिया और वे मेसिडान लौट गए।

लौटते समय सफर में ही सिकन्दर की मृत्यु हुई। पर उसके कई सेनापति उसके जीते हुए इलाकों पर राज्य करते रहे। इस तरह सिंधु नदी के पश्चिम में सिकंदर के सेनापतियों का राज्य बना। लेकिन इसके पूर्व में मगध का राज्य ही सबसे शक्तिशाली राज्य बना रहा।

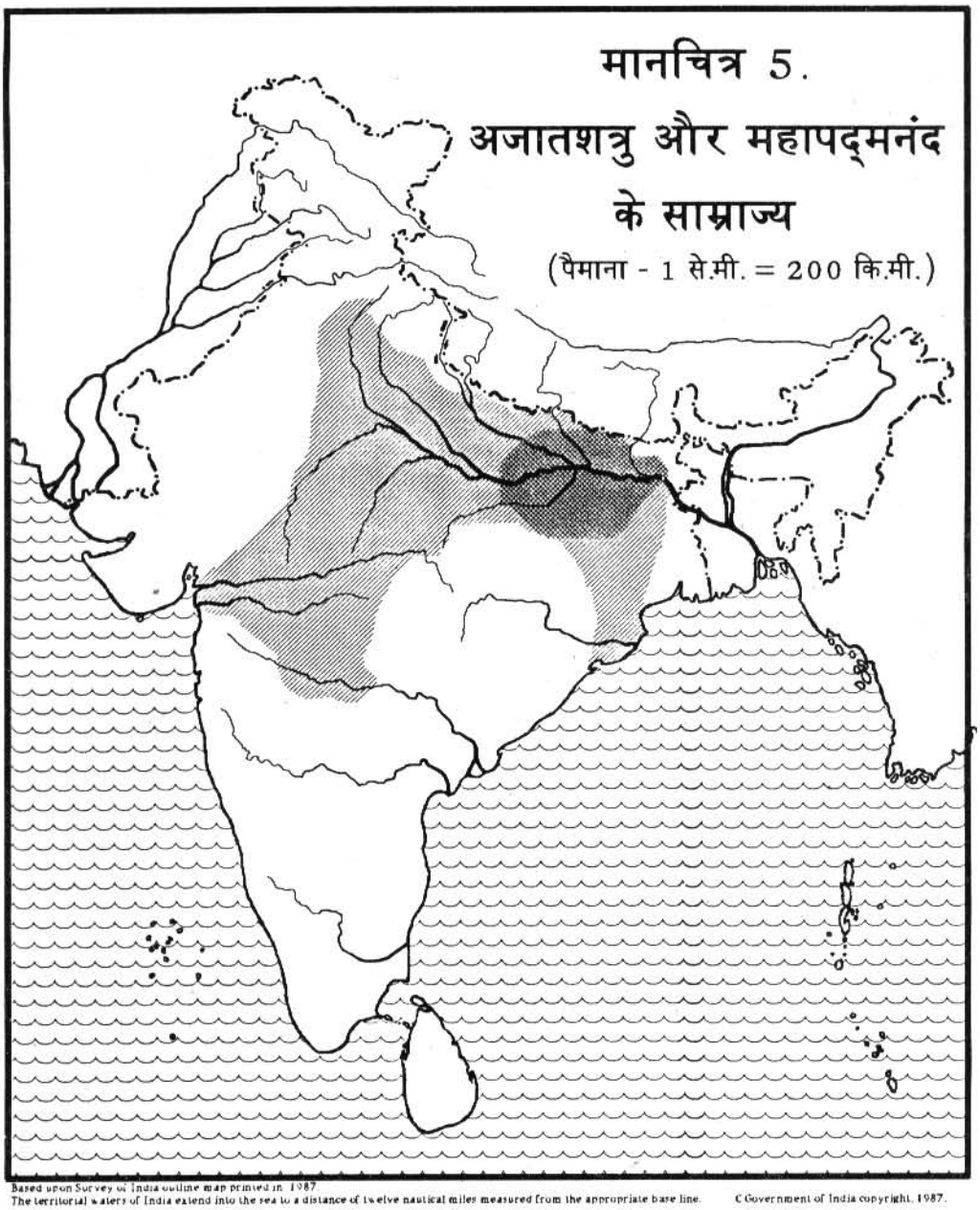

संकेत

भारत की वर्तमान बाह्य सीमा	—·—·—
सागर	~~~
अजातशत्रु का साम्राज्य	●
महापद्मनंद का साम्राज्य	●

अभ्यास के प्रश्न

1. महाजनपद के राजाओं के पास क्या-क्या था जो छोटे जनपद के राजाओं के पास नहीं था? कोई भी तीन बातें समझा कर लिखो।
2. क. राजा पुरुजित ने किन-किन लोगों को अपना अधिकारी बनाया -
   सिर्फ अपने जनपद के लोगों को / सिर्फ राजन्यों को / सिर्फ दूसरे जनपद के लोगों को / जो भी योग्य और वफादार हों।
   ख. अपने अधिकारियों को राजा क्या देता था - बलि का हिस्सा / जीत में मिले धन का हिस्सा/ वेतन
3. छोटे जनपद के राजा बड़े-बड़े यज्ञ करना चाहते थे जबकि महाजनपद के कई राजा यज्ञ नहीं करना चाहते थे। इसका क्या कारण था?
4. इनके बारे में दो-दो वाक्य लिखो -
   क. अजातशत्रु
   ख. महापद्मनन्द
   ग. सिकन्दर
   च. गणसंघ
5. तुम्हारे मन में एक राजा के बारे में जो-जो बातें आई थीं वे तुमने पुरुजित में पाईं या नहीं? चर्चा करो।
6. क. तुम जहां रहते हो क्या वहां कोई महाजनपद था? नक्शा देख कर पहचानो।
   ख. महाजनपदों का इलाका भारत के कौन-कौन से राज्यों में पड़ता है ?
8. राजा पुरुजित किसानों से नियमित रूप से बलि लेने लगा था। यह बात कौन से उपशीर्षक के नीचे तुम्हें पढ़ने को मिली?
9. **साम्राज्य** शब्द का क्या अर्थ है? सही विकल्प छांटो -
   पास का राज्य / छोटा राज्य / जहां कोई राजा न हो / बहुत बड़ा राज्य
10. इन शब्दों का उपयोग करते हुये अपने वाक्य बनाओ -
    कानून, संबंधी, सलाह, नियमित